om-20a_Page 1 and 2 1/20/2014 7:58 PM Page 3

अनुकरण ब्रह्मा बाबा का

परमपिता शिव ने साकार प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा जो सत्य व अति उच्च कोटि का ज्ञान दिया, सर्वप्रथम ब्रह्मा बाबा उसकी प्रतिमूर्ति बने। क्योंकि उन्होंने ईश्वरीय ज्ञान के प्रत्येक रहस्य को अपने जीवन में साकार किया, इसलिए हम आत्माएं यह नहीं कह सकतीं कि इतनी उच्च गहन धारणाओं को जीवन में नहीं अपनाया जा सकता। ब्रह्मा बाबा एक मनुष्य थे, परन्तु उन्होंने अपने त्याग तपस्या के बल से सर्वोच्च पद प्राप्त किया। इतना ही नहीं व्यवहार की दृष्टि से वे अति महान व प्रेरक बनकर रहे। यहाँ पर हम उनकी कुछ महानताओं की संक्षिप्त चर्चा करेंगे जिन्हें यदि हम भी अपने जीवन में उतारें तो हम भी उनकी ही तरह महान बन जाएँ।

वे अलौकिक पिता थे

वे थे तो मनुष्य, परन्तु परमात्मा ने उन्हें प्रजापिता ब्रह्मा नाम दिया अर्थात् मनुष्य सृष्टि के आदि पिता, उनके द्वारा ब्राह्मणों को अपना बच्चा बनाया। क्यों? क्योंकि उनकी सर्व के लिए एक पिता की तरह कल्याण की भावना थी, उनमें सभी के लिए अपने बच्चों की तरह आगे बढ़ाने की कामना थी। वे बाप थे–इसलिए अपने प्रत्येक बच्चे का हर तरह से पूर्ण ध्यान रखते थे। उन्होंने सर्व को पितृवत प्यार दिया। किसी एक दो को नहीं, सबको समान रूप से शुभ-भावनाओं का दान दिया। जैसे एक बाप के मन में अपने बच्चों के लिए अकल्याण की भावना नहीं होती, वैसे ही सबने उन्हें सब बच्चों के कल्याण की कामना में रत पाया। वे संकल्प से भी किसी का बुरा नहीं चाहते थे।

- ब्र. कु. गंगाधर

उन जैसा महान बनने के लिए हमें भी यही स्नेह व कल्याण की भावना सभी के लिए रखनी होगी। चाहे कोई हमसे कैसा भी व्यवहार करे परन्तु बदले में स्नेह व कल्याण की भावना हम में ब्रह्मा बाबा के ही दर्शन करायेगी।

उनकी दृष्टि सभी के लिए महान थी

चाहे कोई गरीब हो या साधारण, योग्य हो या अयोग्य, शिक्षित हो या अशिक्षित, वे सभी को ऊँची नज़र से देखते थे। कभी भी वे ये नहीं कहते सुने गए कि ये बच्चा–'कोई काम का नहीं है'। वे कहते थे कि सभी ईश्वरीय सन्तान महान हैं, जिन्हें भगवान ने अपनाया है, उनसे महान भला और कौन हो सकता है। उनकी दृष्टि में सभी बच्चों के लिए बहुत रहम भी समाया होता था। तभी तो वे कहा करते थे कि बच्चे अपने को उतना महान नहीं समझते, जितनी महानता की दृष्टि से बाबा उन्हें देखते हैं। यही कारण है कि सभी बच्चे भी बाबा के प्यार में कुर्बान होने को तैयार रहते थे।

यही दृष्टि हम भी यदि दूसरों के लिए अपनायें, किसी को भी नीची दृष्टि से न देखें तो हमारी यही महानता इस सृष्टि पर हमारे अलौकिक पिता को प्रसिद्ध करेगी।

उनके बोल सभी के लिए वरदानी थे

उन्होंने अपनी मधुर वाणी से सभी के दिलों को जीत लिया था। हज़ारों आत्माओं में कोई भी ये शिकायत नहीं कर सकता था कि बाबा ने कभी उन्हें बुरा बोला था। उनके बोल से अमृत बरसता था, वे सुखदाई वाणी उच्चारते थे। उनकी मीठी शिक्षायें चुम्बकीय आकर्षण वाली थीं। अपने बोल द्वारा वे कमजोर आत्मा को भी प्रोत्साहित कर देते थे। कभी भी उन्होंने किसी को निराशा की ओर बढ़ने नहीं दिया।

हम ब्रह्मा वत्स ब्रह्माकुमार कुमारी भी यदि उनका ही अनुकरण करें तो हमारे बोल भी शक्तिशाली व वरदानी बन जाएं। कटु वचन रूपी विष के लेन-देन से मुक्त होकर हम मधुर अमृतमय हो जाएं और हमारा यह आदर्श व्यवहार ही सभी को साकार में प्रभु का साक्षात्कार कराये।

उनकी दृष्टि आत्मिक थी

कोई भी उनके समक्ष आता था, तो सर्वप्रथम वे उसे रुहानी दृष्टि देते थे। इसी कारण सभी उनके सम्मुख जाते ही रुहानियत का व अशरीरीपन का सहज ही अनुभव करते थे। जब से वे ब्रह्मा बने, उनकी दैहिक दृष्टि समाप्त होकर दिव्यता में बदल गई थी।

इसी प्रकार सारे दिन हमारे समक्ष भी अनेक मनुष्य आते हैं, उन्हें भी यदि हम आत्मिक दृष्टि से देखेंगे तो उनकी भी बुरी-भावनाएं समाप्त हो जाएंगी, उन्हें एक अलौकिक सा खिंचाव होगा। और वे भी प्रभु से अपना नाता जोड़ने की प्रेरणा ले सकेंगे।

वे क्षमावान थे

अनेक बार कई बच्चे गलती करके बाबा के सम्मुख आते थे। उस समय उनसे बाबा का व्यवहार सचमुच सर्व-महान बनाने की प्रेरणा देने वाला होता था। वे तनिक भी ये आभास नहीं होने देते थे कि वे उनसे असन्तुष्ट या नाराज़ है बल्कि उस आत्मा को यह आभास कराते थे कि वह महान है, जो कुछ हुआ उसे भूल जाओ, अब आगे बढ़ो। और जब कोई बाबा को अपनी गलती सुनाता था तो बाबा उसे पूर्णतया हल्का कर देते थे। मनुष्य भारी होकर उनके सामने आते थे और हल्के होकर खुशी से भरकर उड़ते हुए जाते थे।

यही धारणा हम सभी को भी सीखनी है। हम भी क्षमावान बनें। क्षमा करना ही महान आत्माओं की महानता है। क्षमा करके हम दूसरों को आगे बढ़ा सकते हैं, संगठन में स्नेह का वातावरण बना सकते हैं। दूसरे को क्षमा कर देना ही सिखाने का सर्वोत्तम तरीका है।

वे ज्ञान के स्वरूप बनकर रहे

यदि कोई कहे कि सत्य ज्ञान क्या है तो उनका जीवन ही इसका उत्तर था। वे ज्ञान

शेष पेज 9 पर

लाईट बनो और परमात्मा की माईट लो

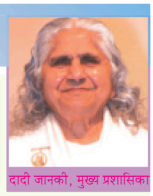
दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

मुझे बहुत खुशी हो रही है, इतने सब परमात्मा के बच्चे यहाँ आवें और मैं न देखूँ, न मिलूँ तो फीलिंग क्या होगी! इनर पीस, इनर पॉवर यह अन्दर की बात है। दुनिया में रहते पीस (शान्ति) जो है वह पीसेज़ पीसेज़ (टुकड़े-टुकड़े) हो गई है। यहाँ एक ईश्वरीय स्नेह के संग से पीस आ जाती है। वैसे शान्ति कहाँ से मिलेगी, कोई स्थान नज़र नहीं आता।

शान्ति और प्रेम (LOVE) एल यानि लाइट, ओ (शिवबाबा), वी (विक्ट्री), ई (एवर)....तो पहले लाइट (हल्के) हो गये! किसने बनाया? एक ने। सदा के लिए विजयी हैं, फॉर एवर हैं। लव कहाँ है? मन में है या दिल में है? मन को शान्ति चाहिए, दिल को प्यार चाहिए। मन अन्दर है, दिल यहाँ है। दिल से हमारा धर्म, जाति, रंग, भाषा, भेद निकल गया। कोई डर नहीं है - हिन्दू, मुसलमान, क्रिश्चियन, पारसी हम सब एक के हैं, हम एक हैं इसलिए यहाँ आपस में बहुत प्यार है। मेरा जी चाहता है, दिन-रात आप यहाँ इसका अनुभव करो। प्यार, बच्चे को भी चाहिए, तो बूढ़े को भी चाहिए। बीमार को भी चाहिए तो तन्दुरूस्त को भी चाहिए क्योंकि अगर दिल का प्यार है तो उससे, कई ऐसे हैं जो अपनी बीमारी भी भूल जाते हैं। तो दिल में कोई भी बात, पराई बात या पुरानी बात दिल में अगर याद करते हैं...तो करते हैं मन से, चिंतन से, दु:ख की फीलिंग आती है दिल को। कोई कहता है आज मैं बड़ी खुश हूँ, क्यों? दिल को बड़ा अच्छा लग रहा है।

दूसरा प्यार नैचुरल है, जब शरीर में है तो माँ बाप भाई बहनों का प्यार होता है और जब इस शरीर से न्यारे हो तो परमात्मा का प्यार मिलता है। वो सर्वशक्तिवान ऐसा है जो हमारी कोई भी कमी-कमजोरी को खत्म करता है, इतना उसका प्यार है। लाईट महसूस करते हैं क्योंकि लाईट मिल गई। ऑलमाइटी है, पतित-पावन है, वण्डरफुल है। जितना उनसे प्राप्ति होती है, समझ से पहचान होती है, प्राप्ति दिल से होती है, बुद्धि से महसूसता होती है। इस मनुष्यात्मा को 10 कर्मेन्द्रियां, ज्ञान इन्द्रियां मिली हैं, वे सब हमारे ऑर्डर में हों। कोई लोभ मोह वश या क्रोध वश बोलने लग पड़े तो उस समय ओम् शान्ति बोलो, गुस्सा नहीं क-रो। कभी काम वश बुद्धि भ्रष्ट हो जाए तो काम महान शत्रु है। लोभ वश है तो सब मुझे ही चाहिए...यह रॉयल्टी नहीं है। मोह से सम्बन्धों की खींच होती है। अहंकार तो बात मत पू-छो...इसलिए हमारा नारा है पवित्र बनो योगी बनो। पढ़ाई है, बी होली बी राजयोगी। जिसको यहाँ की पढ़ाई पढ़नी है वो यहाँ आओ। फिर वो कहेंगे मेरे में पांच विकार हैं, अगर किसी को वह छोड़ना हो तो उनको यहाँ मदद कर सकते हैं। विकार कोई भी हो, सब खराब ही हैं, उसमें भी कोई भी कारण से थोड़ा भी गुस्सा आया माना कहेंगे बॉडी-कॉनशियस है। देखना, कैसे क्या ख्याल चलता है, सोल-कॉनशियस में, दिन और रात का अन्तर है। मैं पुराने नये सबको कह रही हूँ, आप समझते हैं यह ज़रूरी है? जो समझते हैं ज़रूरी है हाथ उठाओ। सोल कॉनशियस और बॉडी कॉनशियस के सही अर्थ के साथ फर्क समझो तो रीयली इतना परिवर्तन आ जायेगा, बात मत पूछो। अभी भी थोड़ा इसपर गहराई से सोचने पर सोल कॉनशियस...जैसे बाबा याद है, अच्छा चेहरा मुस्कराता है। बॉडी-कॉनशियस है तो कैसे हो जाते हैं, यह रॉयल्टी नहीं है। राजयोग है यानि राजाई की नेचर हो, योग यह है। ओम् शान्ति।

परमात्म साथ और साक्षीपन रखेगा दु:ख से दूर

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

टीचर्स को देख करके सभी को तो क्या बाबा को भी बहुत खुशी होती है। आप बाबा की खुशी देख रही हैं! टीचर्स को देखकर बाबा कितने खुश हो रहे हैं और बाबा तो कहता है कि टीचर्स मेरे समान हैं क्योंकि मैं भी सेवा करता हूं और टीचर्स भी सेवा करती हैं। तो मेरे समान कर्तव्य करने वाली यह निमित्त बहनें हैं। बाबा को भी टीचर्स का इतना रिगार्ड है, मैं तो कहती हूं कि भगवान इतना रिगार्ड रखे, यह तो स्वप्न में भी नहीं था लेकिन अभी प्रैक्टिकल में देख रहे हैं। आप समझती हो इतना रिगार्ड है! जिस तरह भगवान हमारा रिगार्ड रखता है, कहता है मेरे समान हो, जैसे मैं सेवाधारी हूं वैसे आप भी सेवाधारी हैं और कितनी सैलवेशन मिली है। दुनिया की आवाज़ से परे, सेन्टर का स्थान मिला है। और उस स्थान पर सुखी होके, खुश होके रह रही हैं। रहने का ठिकाना भी अच्छा, बुद्धि का ठिकाना भी अच्छा क्योंकि और कोई काम नहीं, एक ही काम है, जो आया है उसको सैलवेशन देके बाबा का बनाना है, बस। तो बताओ टीचर्स, इसी काम में बिज़ी हो ना? बाबा का कितना प्यार है टीचर्स से, आपको भी इतना प्यार है ना बाबा से। बाबा कहता है, कोई भी कैसा भी साथी मिला है लेकिन साथ में किसके रहते हो? भले स्थूल में जो भी साथी साथ रहते हों लेकिन आपका मन तो बाबा के साथ है ना। है? थोड़ा-थोड़ा टीचर्स के स्वभाव को देख करके गड़बड़ हो जाता है। बाबा कहता है, मैंने भी तो इतनों को सम्भाला है ना, स्वभाव नहीं देखा। आपको तो कितने मिलते हैं, चलो 20-25 ज्यादा से ज्यादा, बाकी तो होते हैं 5-6 और बाबा को कितने मिले हैं? आप भी तो मिली हो ना, आप भी तो बाबा की बनी हो ना। पक्का है ना? अरे! कुमारियों को तो देख करके बाबा इतना खुश होता है...नहीं तो क्या कुमारियों की हालत होती है! यह तो इतनी बच गयी जो भगवान की साथी बन गयी और सभी उनको किस दृष्टि से देखते हैं? वैसे कुमारी के ऊपर जो दृष्टि पड़ती है वो क्या और कैसी होती थी और अभी यह देवियाँ हैं, परमात्मा की सन्तान हैं, इन्हों के नयन मस्तक से आत्मा की लाइट दिखाई देती है। बाबा ने पहले भी कहा था कि सबको यह अनुभव होना चाहिए कि इनके अन्दर आत्मा की लाइट चमक रही है। कई बहनें कहती हैं, वैसे तो सब ठीक है लेकिन जो साथी होते हैं ना वो खिटखिट करते हैं, तो बाबा कहता है तुम्हारे साथी तो थोड़े होंगे, बाबा के कितने साथी हैं। उसमें कोई-कोई तो खिटखिट भी करते होंगे लेकिन बाबा कभी भी उन्हों को यह नहीं कहते कि यह तो हैं ही ऐसे! नहीं। फिर भी मेरे हैं, मेरे हैं सो बाबा के हैं। लेकिन मेरे को ज़िम्मेवारी मिली है, इन्हों को साथी बना करके स्वर्ग में ले जाना, इतनी ज़िम्मेवारी है। हम लोग ही इस दुनिया को परिवर्तन करके स्वर्ग बना रहे हैं। उस स्वर्ग के लायक बनना, बनाना यही टीचर्स का काम है। अभी भी देखो, छोटा सा सेन्टर का स्थान है, छोटा है लेकिन सोने के लिए पलंग है, खाना तो अच्छा मिलता है, आपस में बनाके खाते तो हो! आपस में, चलो खिटखिट थोड़ी होती भी है लेकिन फिर भी देखो, आपको जैसे बाबा प्यार करता है, ऐसा प्यार किसी को मिलता है! देखो, रोज़ बाबा मुरली में क्या कहता है? मीठे-मीठे प्यारे-प्यारे बच्चों को गुडमॉर्निंग यादप्यार और नमस्ते, कौन करता है? हमारा बाबा। जो विश्व का पिता है, सारा विश्व जिसको याद करता है वो हमसे रोज़ मिलता है। रोज़ मिलता है ना! भले सेन्टर पर आप अलग रहते हैं, मधुबन में सदा नहीं रहते हैं लेकिन आप सभी ने बाबा से एक वायदा किया है, वो याद है? बाबा मैंने आपको दिल में बिठा लिया है, तो बिठाया है? दिल में बाबा को बिठा लिया है तो दिल की बात भूलती है क्या? तो दिल में कौन है? मेरा बाबा। और दिल में बाबा होने के कारण ऐसे अनुभव नहीं होता कि मैं अकेली हूं। मेरे साथ बाबा है, मेरे दिल में बाबा बैठा है।